धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अक्तूबर- 2012

* देव वाणी
* आत्मा की खुराक
* एक सभा में शमिल होकर
* कल्याण सत्संग और सत्य धर्म बोध उत्सव
* सत्य धर्म बोध उत्सव में शामिल होकर
*गंगा अभी सूखी नहीं
* शुभ संग्राम

देव वाणी

* जो आत्मा जहां तक गाढ़ रूप से मेरे साथ जुड़ा हो, वहां तक उसके लिए जरूरी है, कि वह कुल ऐसे जनों को जो मेरे साथ जुड़े हुए हों, और जिन पर जहां तक मेरा अधिकार हो चुका हो, इज्ज़त और मुहब्बत की आंखों से देखे, और आपको उनका और उनको अपना समझे, परन्तु जिसकी ऐसी गति नहीं, वह मेरा नहीं हो सकता।
* धन्य हैं वह जन, जो अंह के अनुचित अधिकार और अन्धकार के बढ़ाने वाले सम्बन्धों के बन्धन और संसारिक चाल की परवाह न करके, मेरी उस ज्योति में आए हैं या आना चाहते हैं, कि जो उन्हें आत्मिक अन्धकार और मृत्यु से बचाती है।
* मेरे साथ जुड़ने के बाद कोई आत्मा जहां तक मेरे उच्च प्रभावों को ग्रहण करता है, वहां तक उसके भीतर देवत्व की उन खूबियों वा बरकतों और उसके पवित्र नियमों के लिए प्यार बढ़ता जाता है कि जिनके देखने वा पहचानने के वह योग्य हुआ हो।
* मेरे साथ जुड़कर और मेरे अधिकार में आकर प्रत्येक आत्मा पुराने नीच वा अधम जीवन से निकल कर नया, पवित्र और उच्च जीवन लाभ करता है।
* मेरे साथ जुड़ने के बाद कोई आत्मा जहां तक मेरे उच्च प्रभावों को ग्रहण करता है, वहां तक उसके भीतर वह नई ज्योति प्रगट होती है, कि जिससे वह आत्मिक जीवन की असलियत और उसके नियमों को ज्यादा से ज्यादा देखने और पहचानने के योग्य बनता जाता है।
* देवत्व का यह ख़मीर जो मेरे अन्दर है, पिशाचत्व को मारता और गारत करता है, इसलिए वह पिशाचत्व के विष से संक्रांत आत्माओं के उद्धार और उनकी भलाई का पवित्र दैवी उपाय है।
* जैसे जो शाख घतूरे के पेड़ से जुड़ी हुई है, वह जहरीले फल पैदा करती है और जो अंगूर की बेल के साथ जुड़ी होती है, वह अंगूर पैदा करती है, वैसे ही जो आत्मा अपने वा किसी और के मलीन हृदय के वृक्ष से जुड़ा हुआ है, वह अपने भीतर अपने और औरों के लिए विषकर और विनाशकारी फल उत्पन्न करता है, और जो आत्मा मेरे साथ जुड़ता है, वह देव रस को लाभ करके देवत्व के पवित्र और उच्च अमृत फल पैदा करता है।
* मैं जिस देवत्व की जिन्दगी का वृक्ष हूँ, वह अमृत फल पैदा करता है और इसलिए जो आत्मा मुझसे शाख़ की न्याई जुड़ता है, वह केवल यही नहीं कि खुद विनाश नहीं होता और औरों का नाश नहीं करता, किन्तु अपने और औरों के जीवन में अमृत फल पैदा करता है।

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 9

सितम्बर – 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

आत्मा की खुराक

विकास क्रम नेचर का अद्भुत नियम है। इसके द्वारा विश्व के चारों जगतों में निरन्तर उच्च परिवर्तन आता है। विश्व के पदार्थों पेड़ पौधों, पशु-पक्षीयों और मानव संसार के भीतर नये गुण वा योग्यताएं पनपती रहती हैं। इससे अध्ययन शील, विचारवान और खोजवान मनुष्यों के ज्ञान में नया इज़ाफा वा प्रगति होती रहती है। यही नया ज्ञान मनुष्य व और जगतों के विकास में सहायक होता है।

देव धर्म के परम पूजनीय बानी और संस्थापक विकास क्रम की अद्भुत देन हैं। उनकी हस्ती का और विशेषकर उनके भावात्मिक विकास का अध्ययन मनुष्य मात्र के लिए सर्वोत्म विषय है, जिसकी ओर मनुष्य की सीमित सोच और समझ को, उसके अंह परिपूर्ण वृति और उसकी बढ़ती हुई योग्यता और सुख स्वादों के टशन उस ओर जाने नहीं देते। परम पू० भगवान देवात्मा ने धर्म या रूहानियत के क्षेत्र में नये ज्ञान का भण्डारा खोला है, धर्म जगत का अश्चर्य्य जनक सांईसीकरण किया है और धर्म को, मनुष्यआत्मा को, धर्म के साधनों, पूज्य वा पूजा पाठ को, लोक परलोक को, मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य को बिल्कुल नवीन, आधुनिक और विज्ञान मूलक अर्थ प्रदान किए हैं। इन सब से लाभान्वित होना प्रत्येक मनुष्य का सौभाग्य है।

पहली बात तो यह है कि मनुष्य को आत्मा के अस्तित्व सम्बन्धी कोई ज्ञान नहीं था, वह या तो आत्मा को कल्पित परमात्मा या ब्रह्म का एक अंग समझता आ रहा है, या जो मनुष्य बहुत ज्ञानवान, विचारशील वा विज्ञान मूलक सोच रखते हैं, उन्होंने परमात्मा के अस्तित्व को कल्पित जानकर नकार दिया, उन्होंने आत्मा के अस्तित्व को भी नकार दिया है। इसलिए अथीसट या रब से मुन्कर, पोज़ीटिविस्ट, Rationlist और तर्कशील वर्गो के लोग आत्मा के अस्तित्व से ही मुन्कर हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि नेचर का हर पदार्थ और आत्मा की हस्ती दो पदार्थों को लेकर बनी है, एक मैटर जो जड़ पदार्थ है, दूसरी का नाम शक्ति है। जैसे जड़ , ठोस, हवाई, तरल और सूक्ष्म रूप रखती है, उसी प्रकार शक्ति भी दो प्रकार की है। अजीवित शक्ति जैसे, ताप, बिजली, चुम्बक आदि, जीवित शक्ति, पौधों,

पशुओं और मनुष्यों की जीवनी शक्ति।

परम पू० भगवान देवात्मा ने मनुष्यात्मा की इस प्रकार परिभाषा की है। उन्होंने फरमाया है "कई प्रकार की शक्तियों (गठन प्राप्त) को लेकर बना, जो जीवित अस्तित्व मनुष्य के शरीर के भीतर वास करता है, वह मनुष्य का आत्मा है" इस प्रकार आत्मा कोई परमात्मा का अंश नहीं है, वह एक जिन्दा शक्ति मय जिन्दा अस्तित्व है।

आत्मा के नये अर्थ यह हैं कि यह निर्लेप नहीं, अमर नहीं, सदा रहने वाला नहीं, यह परिवर्तित होता है, यह कमज़ोर व बलवान होता है, यह जीता भी है और मर भी जाता है। मनुष्य के अस्तित्व में यह मुख्य, असल, सत्य और सार वस्तु है। इसके साथ मनुष्य की हस्ती है। यह है तो मनुष्य जीवित है, नहीं तो मुर्दा है।

कल्पित और अवैज्ञानिक धर्मो के लिए यह एक अचम्भा ही है कि आत्मा की भी कोई खुराक हो सकती है। हां, जो नियम वा साधन आत्मा को जिन्दा रखते हैं, उसको बलवान बनाते हैं, उसको मृत्यु से बचाते हैं, वही आत्मा की खुराक हो सकते हैं। यह कल्पित धर्मो के लिए नई खोज है।

मनुष्य की जीवनी शक्ति या आत्मा को बलवान करने वाली दो बातें हैं, जो मनुष्य आत्मा की खुराक बनकर उसकी बलवर्द्धक और पौष्टिक सिद्ध होती हैं। पहली वस्तु है उच्च असर वा प्रभाव (Higher vibrations या higher unfluences) जिनका स्वरूप खुशबू जैसा कहा जा सकता है। जो उच्च जीवन धारी मनुष्यों के जीवनों से निकलते हैं, उनको प्रभाव कहते हैं। देवात्मा के देव जीवन के प्रभाव सर्वोच्च प्रभाव हैं, वह मनुष्य के लिए जान और प्राण की वस्तु हैं।

दूसरी चीज़ है दूसरे अस्तित्वों की सेवा या दूसरी हस्तियों के विकास में अमली सहयोग। मनुष्य के ऐसे कर्म जो अपने से निकलकर दूसरे अस्तित्वों का उत्थान करते हैं, उन कर्मो द्वारा मनुष्यात्मा को अति सुन्दर खुराक मिलती है।

इसलिए कहा गया है:-

"By building others, we build ourselves, By destroying others, we destroy ourselves."

अर्थ:- दूसरों को बनाने से हम बनते है, दूसरों की हानि करने से हम नष्ट होते हैं।

उक्त दोनों खुराकें, पदार्थ या कर्म मनुष्यात्मा की बहुमुल्य खुराक है।

उच्च असर, उच्च जनों अर्थात उच्च जीवन धारियों से ही प्राप्त हो सकते हैं, देव असर जो सर्वोच्च असर हैं अर्थात रूहानी रोशनी वा तेजमयी प्रभाव, परम पू० भगवान देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करने के अटल नियमों के पूरा करने के योग्य होकर ही प्राप्त हो सकते हैं। या किसी मात्रा में उन जनों की संगत से, जिनका किसी अंश देव रूप के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन हुआ है। देवरूप तक या देव प्रभावों तक रसाई मनुष्यता की सर्वोच्च अध्यात्मिक उपलब्धि है। इस योग्य होना मनुष्य का सर्वोच्च सौभाग्य है, इसके साथ मनुष्य अमृत स्त्रोत के साथ जुड़ जाता है। अपनी योग्यतानुसार अवश्यक खुराक प्राप्त करने

के योग्य बन जाता है।

दूसरी खुराक दूसरों की विशुद्ध सेवा के कर्म हैं। यह भी उच्च वा सात्विक भावधारी मनुष्य ही कर सकते हैं। सात्विक श्रद्धा, सात्विक कृतज्ञता, दया और हानिपरिशोध के भाव ज्यों ज्यों बढ़ते जाते हैं और बलवान होते हैं, वैसे वैसे वह मनुष्य को समर्पण के लिए तैयार करते हैं और विशुद्ध सेवा के लिए मजबूर करते हैं। उक्त सात्विक भावों के बीजों को लेकर जन्म लेना और उन्हे विकसित करने वाले वातावरण में उनका विकास करना और उन्हें बलवान करना मनुष्य जीवन का बड़ा सौभाग्य है। इन सुन्दर सात्विक भावों के बिना सच्चा परोपकार असम्भव है, जैसे चीनी और घी के बिना हलवा नहीं बन सकता।

इस विषय पर गुरू महाराज एक जगह पर फरमाते हैं: -

आत्मा का बल बढ़ने का अर्थ है, आत्मा की मुख्य वा मूल निर्माण कारी शक्ति के बल का बढ़ना। आत्मा के भीतर निर्माणकारी शक्ति ही मुख्य शक्ति है। यदि आत्मा अपने भीतर अपने रहने के लिए शरीर निर्माण का काम करने की पूर्ण समर्थ्य रखती है, तो वह मौत के बाद अपना नया सूक्ष्म शरीर बनाकर जिन्दा रह सकती है, यदि वह शक्ति शिथिल हो जाती है, तो निर्माण कारी शक्ति अपना बल खो बैठती है। वह कोई शरीर नहीं बना सकती, बिना सूक्ष्म शरीर के वह रह नहीं सकती, और नष्ट हो जाती है, इसलिए आत्मा की इस मुख्य शक्ति की खुराक भी विशुद्ध परसेवा ही है।

"आत्मा के भीतर यह निर्माणकारी (आत्मा की मुख्य शक्ति) शक्ति विशुद्ध उपकार के भावों से वा दूसरों को बेहतर बनाने का काम करने से बढ़ती है। यदि यह बेहतरी का काम न किया जाए, तब यह घटती है। धीरे - धीरे पूर्णत: नष्ट हो जाती है। जैसे गेहूं के दाने यदि हम भून दें या मुर्गी के अण्डे हम उबाल दें, तब उनके भीतर की जीवनी शक्तियां मर जाएंगी। उसी प्रकार बिगाड़ने वाले काम करने से मनुष्य की निर्माणकारी शक्ति भी मर जाती है।

"अब तुम लोग यह देखो के तुम दिन भर में किस कदर ऐसी गतियां करते हो, जो बनाने वाली हैं, इसके विरूद्ध जो बिगाड़ने वाली गतियां हैं, वह तो होती रहती हैं। याद रखो! कि यदि तुम्हारे तन, मन और धन की शक्तियां नेचर के भिन्न अस्तित्वों के बनाने में खर्च नहीं होंगी, तो जीवन के विचार से तुम्हारा दिवाला निकल जाएगा। जैसे कोई मनुष्य रुपये खर्च करने का काम तो करता रहे, आमदन का कोई भी काम न करे, तो वह कुछ समय में दिवालिया बन जाता है, उसी प्रकार यदि कोई मनुष्य बनाने का काम तो कोई न करे और बिगाड़ने का काम बराबर करता रहे, तो वह कुछ समय में (आत्मिक लिहाज़ से) दिवालिया बन जाता है।

"तपेदिक का रोगी जी तीसरी (आखिरी अवस्था) मंजिल में पहुंच जाता है, तो उसका ईलाज असम्भव हो जाता है, उसी प्रकार जो आत्मा अपनी निर्माणकारी शक्ति को इस कदर विकृत बना लेता है फिर उसके द्वारा निर्माण का काम होना पूरी तरह बन्द हो जाता है, उसके आत्मा का बचना

भी असम्भव हो जाता है।

"मनुष्य की यह निर्माणकारी शक्ति, किसी को बिना कारण दुख पहुंचाने या उसकी अनुचित हानि करने से घटती है और किसी अस्तित्व को पहले से बेहतर बनाने से बढ़ती है। यदि तुम्हारे आत्मा की ऐसी हालत हो चुकी है कि आप निर्माणकारी शक्ति बढ़ाने वाला कोई उच्च भाव भी अपने भीतर पैदा करने की समर्थ्य खो चुके हो तो तुम जीवन दाता सत्य देव की शरण में आकर भी बच नहीं सकोगे।

"काश! कि जो आत्मा बचने की हालत में हैं, वह बच सकें और ऐसी हालत में जाने से पहले पहले बच सकें कि जिसमें पहुंचकर उनका बचना असम्भव हो जायेगा।

"आपका भला इसी में हैं कि तुम हररोज़ विशुद्ध भावों से दूसरों के लिए सेवाकारी बनकर अपने भीतर की निर्माणकारी शक्ति को बढ़ाओ और मछरों, खटमलों, पिस्सूओं की तरह स्वार्थी और हानिकारक रहकर नष्ट न होवो। आपके लिए यदि सम्भव हो तो तुम बेहतर बनो, दूसरों को बेहतर बनाओ। नेचर में तुम्हारे जीवन के बनने वा बिगड़ने का यही अटल नियम है कि तुम दूसरों को बेहतर बनाने में आप बेहतर बनोगे। काश! तुम इस नियम को देख सको और उसको देखकर बिगाड़ने वाले नियमों को पूरा करने से रुक सको और बनाने वाले नियमों को पूरा करने के अधिक से अधिक योग्य हो सको"

बलदेव सिंह

भजन

मरती रूहों के शफागर, ऐ मेहरबां, मुझ को शरण मे ले लो, मेरी रोगी है आत्मा।
बोझे गुनाह से डुबूं, मिलता नहीं किनारा, मिले देव तेज मुझको, तो कुछ कर सकूं कफारा,
मुझे पतन से निकालो, मेरी रोती है आत्मा।
मैं अदना ख़्वाहिशों का शैदाई, बन गया हूं घर में लगाकर आग,
स्वंय ही तमाशाई बन गया हूं, इन शोलों से बचालो देवात्मा।
तेरी ज्योति बिना थी मैंने देखी कहां, आत्मा पतन से ऐसी दुर्दशा।
मानता था अमर जिसको मैं ईश्वर का निशा,
मिथ्या विश्वासों ने गर्क बड़ा मेरा किया, देह के अभिमान ने भी है अन्धेरा किया।
नीच सुखों में ही रहता मैं गलतां,
आत्मिक बोध ही है सारा तेरे आदेशों में, प्रभावों में तेरे संदेशों में,
उच्च जीवन का आदर्श ही है तेरा हर ब्यां, मुझे अपनी शरण में ले लो, मेरी रोगी है आत्मा,
मरती हुई रूहों के शफ़ागर, ऐ मेहरबां।

ओम प्रकाश अदर्श

एक सभा में शमिल होकर

आज ईतवार की सभा में बैठकर पू० भगवान की अद्वितीय शरण पाने के सौभाग्य का थोड़ा सा बोध हुआ। सभा का विषय था कि गुरू महाराज की शरण को पाकर हमारे कई अन्धेरे दूर हुए हैं, उनके प्रति हम कृतज्ञ नहीं। अब भी हम अन्धेरे के जीव हैं, जो उनकी ही ज्योति में दिखाई दे सकता है, परन्तु हमारा इस ओर ध्यान नहीं जाता और न संग्राम होता है।

सभा में बैठे मुझे यह अनुभव हो रहा था कि यदि गुरू महाराज की शरण न मिलती तो कितने पहलुओं में पशु वा अज्ञानी रहकर ही खत्म हो जाती। हो सकता है कि मोटे पापों से बची रहती क्योंकि उस समय स्त्रियां अधिकतर बची रहती थी, परन्तु चारों तरफ के पाप भरे वातावरण से कोयले की दलाली में मुंह काला वाली कहावत के अनुसार उसके छींटे तो अवश्य पड़ते।

मुझे सबसे बढ़कर यह सौभाग्य नज़र आ रहा था कि मिथ्या विश्वासों का जाल पापों से भी बढ़कर भयंकर है। जैसे हालातों में पलना था, उसमें मत्था टेककर या कुछ पाठ सुनकर ही सन्तुष्ट रहना था। पू० भगवान ने जो विज्ञान मूलक शिक्षा दी है, उसने ज्ञान के किवाड़ खोल दिए हैं। आत्मा क्या है? आत्मा की गठन क्या है? आत्मा का परिवर्तन क्या है? कौन सी गतियां नीच बनाती है? आत्मा कैसे बनता है? इसका मान्सिक ज्ञान भी कहां से प्राप्त होना था। भले और बुरे कर्मो की कम से कम कुछ मान्सिक उपलब्धि तो हुई है। मिथ्याओं के भयंकर जाल से तो छुटकारा हुआ है।

इससे आगे श्रद्धा, कृतज्ञता का तो नाम भी नहीं सुनना था। अपने व्यवहारों का कोई ज्ञान नहीं होना था। सम्बन्धों में जो बुरे व्यवहारों को ब्रेक लगी है और अच्छे व्यवहार करने में खुशी मिलती है, इसका ज्ञान कहां से मिलना था।

अपने माता पिता को हररोज़ प्रणाम कहां करना था, उन्हें प्रति दिन बार बार धन्यवाद देती हूं कि पहले तो उन्हों ने ऐसे जीनज़ दिए कि गुरू की शिक्षा को समझने की कुछ योग्यता मिल गई, फिर गुरू के दरबार से जोड़ दिया, जिससे न चाहकर भी अथाह भला हुआ है। गुरू की कृपा से सब सुख सुविधाएं प्राप्त हुई हैं। इस वातावरण में प्रतिपालित होकर बच्चे हर प्रकार से सेवाकारी और सहायक हैं। जब घर घर हम बच्चों से दुखी माता पिता को देखते हैं तो गुरू की कृपा और भी झुका देती है। पति पत्नी का रिश्ता इतना सुखमय हो गया है जो इस उमर में एक वरदान है। बुढ़ापे में आपस का अच्छा सहचर्य मिलना बहुत बड़ा सौभाग्य है। गुरू के दर की बरकतें ही बरकतें हैं। इनको जितना याद किया जाए कम है। भाई बहनों के साथ प्यार और सन्मान का रिश्ता है। सेवादारों के साथ स्नेह का रिश्ता बना हुआ, उनके उपकार नज़र आते हैं जिनकी कृपा से सुखमय जीवन बीत रहा है। सब इस दर की मेहरबानी है। अभी अपने और अन्धेरे जिस प्रकार नज़र आने चाहिए, वह नज़र नहीं आते। यह मनुष्य प्रकृति की कमज़ोरी है। काश! मैं इस ओर और सचेत हो सकूं।

सुरजीत बराड़

कल्याण सत्संग और सत्य धर्म बोध उत्सव

इस दफा सत्य धर्म बोध उत्सव कल्याण में रखा गया। उत्सव से पहले 9 तारीख़ से सत्संग रखा गया। श्रीमान बलदेव सिंह जी थराजवाला से होकर 10 तारीख़ 2.30 बजे कल्याण पहुंच गए थे। 2 - 3 धर्म सम्बन्धी पहले से ही उनकी इन्तज़ार में थे। पदमपुर राजस्थान से डाक्टर मुन्शा सिंह जी भी पहुंच गए थे। शाम को 6 बजे एक सभा रखी गई।

शाम की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कराई। जिसमें कुछ सेवक, कुछ लोकल जन और डाक्टर मुन्शा सिंह जी हाजिर थे। उन्होंने फरमाया कि देवात्मा के देवरूप के दर्शन करने आप लोगों के लिए तो मुश्किल हैं ही, 99% के करीब सेवकों के लिए भी मुश्किल है। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने फरमाया है कि मैं देवात्मा के देवरूप को पहचान नहीं सका। हम देवात्मा के प्रभावों द्वारा हित प्राप्त करते हैं, परन्तु देवात्मा को जानते नहीं। सभापति जी ने अपनी स्वयं की वा अन्य जनों की उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया कि किस प्रकार देवात्मा मनुष्यों के सच्चे परम हितकर्ता हैं। देवरूप ही पूर्ण निर्मल और निष्कलंक हो सकता है, इसका बहुत स्पष्ट वर्णन किया।

11.9.12 शाम 5.30 बजे :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, जिसमें लोकल सेवकों के ईलावा एक गांव के अध्यापक भी शामिल थे। इस सभा में सभापति जी ने बताया कि आठ पापों और मिथ्या से बचकर सेवक बनना भी बहुत मुबारक है, इससे बहुत हित होता है, परन्तु देवात्मा की देव ज्योति में जितनी देर अपनी भाव शक्तियों का ज्ञान नहीं होता, उनके सम्बन्ध में फिकर पैदा नहीं होता और संग्राम आरम्भ नहीं होता, तब तक सच्चा सेवक नहीं समझना चाहिए। नीच सुखों के अनुराग हमारे अन्दर हैं। कोई ही काम वासना से ऊपर हो सकता है। धन का अनुराग बड़ी गहरी नीच शक्ति है। इन दोनों भावों की उदाहरणें बहुत आंख खोलने वाली थी। सभापति जी ने साधन करने का अर्थ भी बताया।

12.9.12 शाम 5.30 बजे:-सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अति सूक्षम असरों पर सभा कराई। इस विश्व में भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न असरों की रौ बहती है। मनुष्य आत्माओं को प्रबल रूप से प्रभावित करते हैं। उच्च और नीच असरों का बड़े सुन्दर शब्दों में ब्यान किया गया। परम पू० भगवान देवात्मा ने इस सचाई को देखा है, इसका प्रचार किया है और अपने सेवकों को भी इस सम्बन्धी बोधी बनाया है। उच्च असर उच्च वजूदों वा स्थानों से प्राप्त होते हैं। उच्च संगत भले असर देकर भला परिवर्तन पैदा करती है। नीच संगत के भीतर हानिकारक असर बर्बादी लाते हैं। देव समाज के भीतर वा बाहर के असरों की सुन्दर घटनाओं का वर्णन किया और इस सचाई को अंकित किया।

13.9.12, 7.30 बजे शाम :- सभापति श्रीमान बलेदव सिंह जी ने नेचर के नियमों के विषय में बताया कि साफ हवा के बिना शरीर स्वस्थ्य नहीं रह सकता। शुद्ध पानी सेहत के लिए अति आवश्यक है। पौष्टिक खुराक सेहत के लिए जरूरी है। हवा, पानी खुराक के बाद व्यायाम करना भी जरूरी नियम है। यह नियम पूरे

करने भी आसान नहीं। इसी प्रकार अध्यात्मिक जगत के भी नियम हैं। नीच भावों से बचना, बुरी आदतों को छोड़ना आत्मिक सेहत का नियम है। उच्च भावों को पैदा करना, उच्च अभ्यास आत्मिक दुनियां के नियम हैं। लोकल सेवकों के भिन्न चण्डगीढ़ से श्रीमति सुरजीत बराड़, डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों और दो और जन भी आकर इस सभा में शामिल हुए। आत्मिक सेहत का ठोस नियम है, कम से कम हानिकारक बनना और अधिक से अधिक हितकर बनना।

सत्य धर्म बोध उत्सव

14.9.12 को पदमपुर राजस्थान, यमुना नगर, चण्डीगढ़, मल्लेका, केसूपुरा, देहरादून, लुधियाना, गोनियाणा, महिमा सवाई, गुजरात, गंगानगर, मंडीगज सिह पुरा से बहुत से धर्म सम्बन्धी पधारे। सभा स्थान प्रवेश सभा में भरा हुआ था। बाद में जंडवाला, रणीयां रामपुरा थराजवाला, संगरूर, दड़वा, भगता और अस्ट्रेलिया से बसंत लाल जी पत्नी समेत भी सारे उत्सव में शामिल हुए।

प्रवेश सभा 14.9.12 : यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। पहले श्रीमान सुनील दत्त जी ने, "हमारे पू० भगवन" नामक भजन का अपनी सुरीली आवाज में गान किया। बाद में देव स्तोत्र का गान वा भावपूर्ण शब्दों में सभापति जी ने व्याख्या की और बहुत जोरदार शब्दों में आर्शीवाद प्रार्थना की। दूसरा भजन जगदीष ने "हे सत्य शिव सुन्दरब्रत धारी" भावों से भरपूर होकर गाया।

धर्म क्या है? सत्य धर्म बोध का क्या अर्थ है, इस विषय पर ब्यान किया गया। मनुष्य के भाव कितने बलवान वा गहरे हैं। इनके आगे मनुष्य कितना दुर्बल, बन्धुआ और कृपा पात्र है। उसे अपनी इस प्रकृत अवस्था का ज्ञान नहीं। उसे अपने वजूद को जानने की इच्छा नहीं। परम पू० भगवान के देव प्रभाव मनुष्य को अपना आप जानने के लिए अति दुर्लभ इच्छा पैदा करते हैं। पू० भगवान की देव बाणी पू० देव शास्त्र तीसरे खण्ड से पढ़कर सुनाई और उसकी व्याख्या की। बाहर से आने वाले धर्म सम्बन्धियों का जोरदार शब्दों में स्वागत किया। उत्सव से लाभ उठाने के नियमों के विषय में संक्षेप वर्णन किया। उत्सव की सफलता के लिए शुभ कामना सम्बन्धी नियम बताए गए। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी सारे यात्रियों का दिली भावों से स्वागत किया, परलोक वाली श्रीमान तेज राम जी, कल्याण के देहान्त को गहरे दुख से वर्णन किया। कई सेवाकारियों की सेवा का ब्यान किया। अगले दिन का प्रोग्राम वा डियूटीज़ बताई गई। गर्मी काफी ज़्यादा थी, इस गर्मी में भी 70 के करीब जन बाहर से दूर दूर से आए। यह सब उत्साह वर्द्धक रहा।

15.9.12, सवेरे 9 बजे :- विषय:- आत्मिक अबोध ता की हानियां और आत्मिक बोध के लाभ।

सभापति- श्रीमान बलदेव सिंह जी।

देव स्त्रोत का गान और व्याख्या की गई और सुनील दत्त जी ने दो सुन्दर भजनों का गान किया। सभापति जी ने बताया के मनुष्य रूप रखकर परम पू० भगवान देवात्मा के रूप को अपने आप समझना असम्भव है। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी साहिब ने फरमाया है कि "नेह कलंक जब आएगा, तो नया वाक्य सुनाएगा" स्टीफन सन ने भाप की शक्ति को जाना। इस शक्ति और भाप इंजन का किसी पुरातन ग्रन्थ में ज़िकर भी नहीं है। ग्रामोफोन पर पहले कोई

विश्वास ही नहीं करता था, पर आज ज्ञान में अथाह बढ़ौतरी हुई है। सब मनुष्य अपने आप के विषय में अबोधी हैं। एक एक नशई अकसर मौत का शिकार हो जाता है। एक हकीम जो सभापति जी को शराब सेवन से ज़ुकाम का ईलाज करने का उपदेश दे रहा था अगले दिन शराब के कारण ही मर गया। आत्मिक अबोधता के कारण मनुष्य (1) अन्धकार वासी है, (2) आत्म ज्ञान से कोरा है, (3) मिथ्या और पाप ग्रस्त है, (4) अपने आप इस अन्धकार अज्ञान वा मिथ्या और पाप से निकलने के अयोग्य है। मनुष्य इस अबोधता से परम पू० भगवान देवात्मा से जुड़कर निकल सकता है। इनसे होने वाली हानियों से बच सकता है। कई बहुत स्पष्ट उदाहरणों द्वारा इस अबोध ता को दर्शाया गया। महात्मा बुद्ध की मृत्यु का कारण सेवक की अबोधता और जिद थी। एक लाटरी विजेता और एक ठानेदार की खुशी में शराब पीकर मौत का होना, सलमान रशदी को मारने का फरमान, एक बाप का अपनी ही बेटी से गल्त सम्बन्ध को अल्ला का फरमान कहना, एक लड़की की जिद के कारण एक बहुत गरीब से शादी करके ज़िन्दगी बर्बाद कर लेना आदि मनुष्य की अबोधता वा पागलपन की हालत है। यह सब घटनाएं बहुत सुन्दर ढंग से चित्रित की गई।

फिर सभापति जी ने बताया कि सम्बन्धों में सम्बन्ध सूत्रों के प्रति अज्ञानता, सत्संग प्रति अज्ञानता, सत्संग की सच्ची कीमत, सच्ची संगत का बोध, देव आत्मा के प्रभावों के बोध के बिना आत्म बोध पैदा नहीं हो सकता। अपने परिचालक भावों का बोध, नीच घृणा का बोध ही आत्म बोध है।

उसके बाद पू० भगवान ने मिथ्या वा पाप को बोध किस प्रकार मनुष्यों में पैदा किया है। उसकी जिन्दा उदाहरणें उपस्थित जनों के जीवनों का बताकर सुन्दर ढंग से बताई गई।

11.30 बजे विषयः – स्वास्तित्व सम्बन्धी आदेशों का पाठ और व्याख़्या।

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी,

उन्होंने बताया कि इन आदेशों को समझने और व्याख़्या करने के लिए बहुत विद्वान, विचारशील और उच्च जीवन धारी साधक हृदय की ज़रुरत है, यह उन्होंने अपनी असमर्थता वा दीनता से ब्यान किया।

शरीर सम्बन्धी आदेशों में से कुछ सरल आदेशों का पाठ करके, आत्म सम्बन्धी आदेशों में से पाठ किया- आत्मा का विश्व से सम्बन्ध, आत्मा की परिभाषा, मनुष्य के सच्चे लक्ष्य और मोक्ष दायक और विकास कर्ता देव प्रभावों की आवश्यकता आदि का संक्षेप में पाठ वा व्याख़्या की। 12.45 तक यह सभा चली।

शाम 5 बजे, विषयः – भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

सभापति :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

श्रीमान दत्त साहिब ने "मैं लुट चुका बड़ा हूँ" नामक भजन का गान किया। फिर सभापति जी ने बताया कि धर्म मत, धर्म स्थान, धर्म गुरू बढ़ रहे हैं। अति घृणित, आप्रकृितिक, अवैज्ञानिक और असम्भव करामातों के प्रति विश्वास बढ़ रहे हैं।

भगवान देवातम का जहूर नेचर के विकाास क्रम में हुआ है, जिनके रूप से वचित्र देव ज्योति वा

देव तेज का प्रकाश हुआ है। इन दोनों का नाम ही देव प्रभाव है। जब यह देव प्रभाव किसी अधिकारी आत्मा तक पहुंचते है तो उसे अपना खराब, अपराधी वा मलिन रूप नज़र आता है। उससे निकलने की जोरदार प्रेरणा मिलती है। देव प्रभावों के सच्चे क्रिश्मे पैदा होते हैं, श्रीमान सुन्दर लाल जी, श्रीमान प्रेमबल जी बन्नी, श्रीमान बलकार सिंह जी, श्रीमान जगीर सिंह जी, उनकी धर्म पत्नी, श्रीमान अजीत सिंह जी और श्रीमान हरदेव सिंह जी के जीवनों में देव प्रभावों के सुन्दर कारज को बहुत प्रभावदायक रूप में पेश किया। हाजरीन अद्वितीय कारज की महिमा देखकर धन्य धन्य हो रहे थे। श्रीमान गुरचरण सिंह जी और श्रीमान जगदीष जी कुक्कड़ के भी हृदय परिवर्तन का बहुत सुन्दर ब्यान किया। यह जोर दार सभा पौने दो घण्टे तक चली। अधिकारी हृदय गुरू महाराज के चरणों में झुक रहे थे। ऐसे प्रभाव और अधिकारी आत्माओं तक पहुंचें, ऐसी कामना निकल रही थी। हाजरीन से हाल भरा हुआ था और कुछ जन बाहर भी बैठे हुए थे।

16.9.2012, सुबह 8.30 बजे

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

सबसे पहले एक श्रद्धा विषयक भजन का गान सुनील दत्त जी ने किया। फिर गुरू महाराज का छवि द्वारा अर्चन किया गया। देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। फिर सभापति जी ने व्याकुलता से देव प्रभावों के लिए सहाय प्रार्थना की।

सभापति जी ने बताया कि नीच जीवन अपनी अवस्था के अनुसार ही समझ में आता है। श्रद्धेय कनल जी सातवीं कलास में पढ़ते थे, जब भाई मोहन देव जी ने स्कूल के बच्चों को लेकर सभा कराई। उनके त्यागी जीवन के विषय में उन्होंने पहले ही सुन रखा था। उनकी सभा नशों और मांसाहार के विषय में थी, परन्तु उस सभा ने कनल जी के भीतर पवित्रता पैदा कर दी।

मुझे नीच जीवन शराब पीना ही लगता था, और कुछ समझ नहीं आता था। फिर अपनी काम वासना नज़र आने लगी। जब अपनी नीचता दिखती तो मैं रोता। गुरू महाराज के प्रभावों ने, उच्च संगत ने, उच्च ग्रन्थों के पाठ के प्रभावों ने मेरी यह नीचता बहुत कम कर दी। नीच जीवन किस प्रकार के पिशाच नाच नचाता है और इन्सान पुतलियों की तरह बेबस होकर नाचता है। काम वासना का भुतना होकर क्या क्या कुकर्म होते हैं, यह प्रतिदिन की घटनाएं बताती हैं।

जहां अहंकार है वहां स्वार्थ है, पद का लालच है, इर्षा, द्वेष घृणा, गुस्सा, वैर विरोध सब नीच जीवन ही हैं। मोटे पाप छोड़कर भी, बड़ा ज्ञान ध्यान जानकर भी, नीच जीवन कबर तक साथ जाता है। नीच भावों का नाम ही नीच जीवन है।

एक एम.ए, बी.एड पास बहन अपनी छोटी बहन के दहेज को देखकर कामना करती है कि ऐसा तुफान आए कि यह सारा खराब हो जाए। हमारे नीच जीवन को दिखाना किसी के वश की बात नहीं। केवल देवात्मा के देव प्रभावों का काम है। मैं 7-8 कलास में पढ़ता था। कलास में हुशियार था और फस्ट आता था, दूसरे नम्बर पर जो साथी था, वह मुझसे ताकतवर था। मैंने हैडमास्टर को जो हमारे ही घर में रहता था, सिफारश करके उसे सजा दिलवाई, मैंने झूठी सजा दिलवाई और हैडमास्टर ने मेरा झूठा पक्षपात किया ईर्षा का जीवन नीच जीवन है। मान बड़ाई, अहंकार का जीवन नीच जीवन है, जानकर भी किसी के पैसे वापिस न करना,

किसी के सुख वा शान्ति का अपहरण करना, नीच जीवन है।

किसी पटवारी की नौकरी चली गई, वह किसी तांत्रिक के पास गए, उसने कहा कि किसी के छोटे बच्चे को मार कर खून से नहाओ, सब कुछ ठीक हो जाएगा। गिन्नी नाम के बच्चे को मारकर उसकी पत्नी उस खून से नहाई, ओह! कितना अन्धकार और अनर्थ!!

गुरू महाराज की रोशनी पाप को घृणित दिखाती है। हरिन्द्र सिंह मान को महोत्सव पर पहली बार प्रभाव मिले और उन्होंने शराब छोड़ दी। बेहद भला हुआ है।

श्रीमान नौध सिंह जी का शानदार परिवर्तन पेश किया। अपने स्वार्थ से निकलकर, दूसरों का ख़्याल करके उनके लिए जब कोई काम आना शुरू करता है तो उच्च जीवन शुरू होता है। गुरू महाराज भुतने को फरिश्ता बना देते हैं। पति पत्नी में यदि आपस में सत्कार नहीं तो जीवन नर्क हैं। भगवान देवात्मा जीवन का नर्क दूर करते हैं। उच्च घटनाएं पेश की।

इस सभा के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने धन और जन की अपील की।

<u>सभा 10.30 बजे,</u> सभापति: श्रीमान बलदेव सिंह जी

भजन " बचाना मरती रूहों को मिशन अपना बनाया है।"

सभापति जी ने बताया कि हर माता पिता यह चाहता है कि उसका बच्चा अच्छा खाए, पीए, पहने, लम्बी उमर पाए, पढ़े लिखे और उन्नति करे, हर धर्मवान मां बाप यह चाहता है कि मेरा बच्चा धर्मवान बने। हर विद्वान बाप चाहता है कि उसकी सन्तान विद्वान बन जाए। सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी सौभाग्यवान पिता थे, बेटे और बेटी ने पिता की आज्ञा पूरी की। पूरी गहराई से गुरू के साथ जुड़े रहे। दूसरे सौभाग्यवान जन श्रीमान सिरी राम जी हुए हैं, जिनके बेटे ने गुरू कारज में लगकर उनकी आज्ञा पूरी की। तीसरे सौभाग्यवान जन श्रद्धेय कनल जी थे, जिनके बेटे ने अपनी सब शक्तियों को गुरू मिशन में लगा दिया और पिता की आज्ञा पालन की। श्रीमान रूप चन्द जी कहते हैं कि यदि गुरू से बेमुख हो जाओगे तो सर्वनाश हो जाएगा।

ऐसी समाज के लिए अधिक से अधिक समय देने की अपील की। नीचे लिखे जनों ने एक वा दूसरी जगह पर सत्संग में शमिल होने के लिए नाम दिए: 1) प्रिंसीपल सरताज सिंह 2) बसंत लाल जी और उनकी पत्नी, 3) अनिल कुमार जी 4) डा० मुनशा सिंह जी 5) श्रीमान तेज राम जी 6) श्रीमान जगदीष सिंह जी 7) श्रीमान सीता राम जी 8) श्रीमान रजिन्द्र जी 9) श्री वर्मा जी 10) डा० सतिन्द्र ढिल्लों 11) मिसिज सुरजीत बराड़ 12) श्रीमान जगजीत सिंह जी 13) श्रीमान मधू सूदन जी 14) श्रीमान चमन लाल जी और उनकी धर्म पत्नी। 4 हज़ार मिशन के लिए और 12000 लंगर के लिए दान दिया।

<u>भाव प्रकाश : श्रीमान जगीर सिंह जी,</u> सन 1995 में सेवक बना, अब कुछ अपनी वासनाओं और घृणाओं का बारीकी से ज्ञान होने लगा है। बेनती करता रहता हूं कि मेरा भला करो। यहां आकर बहुत प्रेरणाएं मिली हैं, आशा बढ़ी है, गंदी सोचों का ज्ञान मिला है। लोग शरीफ समझते हैं, परन्तु मैं मैला था, मेरी

वासना नज़र आई है। असल रूप का पता लगा है।

डा० सतिन्द्र ढिल्लों: - मैं बहन जी का और बाकी सबका धन्यवाद करती हूं। मुझे लाभ हुआ है। मेरी श्रद्धा में कमी है। मेरी खुशकिस्मती कि मुझे माता पिता ऐसे मिले जिनकी कृपा से मैं यहां संगत में हूं। पहली सभा में ही बड़ा लाभ हुआ, ध्यान अपनी तरफ ले जाने की अवश्यकता है। यह स्थान ही ऐसा है कि दिल खास अवस्था में पहुंच जाता रहा। चारों जगतों की सेवा की तरफ ध्यान गया, खासकर वनस्पति जगत की सेवा करने का प्रण लिया। बहन जी से क्षमा मांगती हूं कि मैं टाईम की पाबन्द नहीं। गुरू के जन्म स्थान पर जाना चाहती हूं। सब सभाओं से लाभ हुआ हैं।

गुरदेव राज जी: – मैं रोज पाठ वा अपना साधन किया करूंगा।

श्रीमान कुलदीप सिंह जी: – मुझे जब पता लगा कि सत्य धर्म बोध उत्सव कल्याण में मनाया जाएगा, तो मुझे बहुत खुशी हुई। सब धर्म सम्बन्धियों का बहुत बहुत धन्यवाद। परलोक वासी धर्म सम्बन्धियों की याद आती रही। मुझे अपनी भावनाएं पहले से खराब नज़र आई। सारे प्रबन्ध का धन्यवादी हूं।

डाक्टर मुनशा सिंह जी: – मुझे बहुत लाभ हुआ है। सब से बढ़कर यह महसूस हुआ कि मेरा सब कुछ परोपकार में लग जाए। धन का अनुराग और स्वार्थ मेरे विकास में रूकावट है। मैं कंजूसी करता हूं। यदि फल फ्रूट पर कंजूसी करूंगा तो परोपकार कैसे होगा। मेरा धन परोपकार में लगना चाहिए। सन्तान वा धन अनुराग मेरी सेवा के काम में रुकावट न बने। यदि मुझे और प्रभाव मिलें तो मेरा संकल्प पूरा होगा।

श्रीमती निशा जी: - मैं बोलना चाहती थी। अब मुझे पंजाबी समझ आने लगी है। मैं खुशकिस्मत हूं। खेड़ा साहिब हमें सभा के लिए प्रेरित करते रहते हैं। उनके परिवार का हम पर बहुत बड़ा उपकार है। माता जी ने बहुत संग्राम किया है। मेरी मां कहती है कि मैं चारों बहनों से अलग हूं। मेरी सास जी कहती हैं कि तुम हमारी बेटी से भी बढ़कर हो। मैं किसी का दिल न दिखाऊं। मैं सास जी को माता के रूप में समझ सकूं। मुझे बच्चों को लाना चाहिए था, परन्तु परीक्षा आ गई। बहुत बहुत धन्यवाद। ईतवार की सभा मिस न करूं, यह चाहती हूं।

श्री रजिन्द्र जी देहरादून: मुझे बोलना नहीं आता। मैं अपना काम छोड़कर भी श्री अकबरपुर जाऊंगा। धीमान साहिब का धन्यवाद करता हूं। मैं उन्हें याद करके बहुत रोया। मेरे आर्थिक हालात बेहतर हुए हैं। यह गुरू की कृपा है। अब कार भी ले ली है।

श्रीमान गुरदेव सिंह जी मान: – काफी समय से समाज से जुड़ा हुआ हूं। मेरे सब साथी मर चुके हैं, मैं भी जिन्दा न होता। मेरा लम्बा जीवन समाज का दान है। मुझे लम्बी उमर समाज ने दी है यदि कोई दुर्घटना न हुई तो 85 - 90 वर्ष से ऊपर जी सकता हूं। रो रोकर गुरू को धन्यवाद दे रहे थे।

श्रीमान जगजीत सिंह जी: – बहुत लाभ हुआ है, ध्यान अपनी ओर गया है। हमारी समस्याएं विज्ञान दूर नहीं कर सकता, देव प्रभाव ही दूर कर सकते हैं। मैं बेटी को welcome नहीं किया था, फिर एक लड़की को दाखिल करवाया और कई महीने 500 रू० उसकी फीस देने का प्रबन्ध किया। परिवार में मेल

हो गया है। सब इस दर की कृपा है।

इसके बाद श्री अकबरपुर बारे बताया गया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी 1 नवम्बर को धर्म सम्बन्धी यात्रा के लिए जाएंगे। जो धर्म सम्बन्धी जाना चाहें, वह जल्दी पता दें।

आख़िर में सभापति जी ने परम पू० भगवान देवात्मा और सहायकारी शक्तियों और उच्च लोक वासी आत्माओं का हृदय की तह से धन्यवाद किया। हाजरीन का काम काज छोड़कर अच्छी गिणती में पहुंचने का फिर धन्यवाद किया। बाकी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बावजूद पिता के काफी serious बिमार होने पर बहुत संग्राम किया। उनके अधीन बलजीत सिंह जी, बूटा सिंह जी आदि ने अनथक संग्राम किया।

आखिर सबने खड़े होकर आरती का समूह गान किया फिर चार बार जय ध्वनि से इस हितकर पर्व का समापन हुआ।

(एक हाजरीन)

सत्य धर्म बोध उत्सव में शामिल होकर

मेरे विशेष सन्मान के योग्य उपकारी श्रीमान जी, सर्व प्रथम परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा के आगे सजदा करता हूं। जिन्होने हमारे भले के लिए विशेष सत्संगों का प्रबन्ध किया है। फिर श्रीमान K.S. Chuhan ji का धन्यवादी हूं जिन्होने इस सत्संग की मुझे सूचना दी। सूचना सुनकर मैं ने पक्का इरादा कर लिया कि मैं ने जरूर कल्याण के इतिहासिक मंदिर के दर्शन करने हैं क्योंकि 15 - 20 वर्षो से मैं यहां आना चाहता था पर आ नहीं पाया था।

यहां पहुंचकर कर दिल खुश होगया। माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के दर्शन तो शायद 15 वर्ष के बाद हुए हैं। एक दूसरे को मिलकर असीम खुशी हुई। फिर बहिन सतिन्द्र जी ने खुद खाना बनाकर हमें खिलाया उस के लिए मैं उन का अभारी हूं बहिन सुरजीत जी ने भी पास बैठ कर सब हाल चाल पूछा। शाम को माननिय बलदेव सिंह जी के दर्शन करके मन खुश होगया। वह भी हैरान हो गए कि इतनी गर्मी में यहां कैसे आ गए। प्रदेश में मेरी तबियत महीने से बहुत खराब थी और बहुत ज्यादा Hard of Hearing हो गई थी मैं बहुत ज्यादा Depress तथा कमजोर हो चुका था बेटे को जोर दिया कि मुझे शीघ्र भारत भेजो इस ने कृपा करके भेज दिया यहां पर दिल्ली Air port पर हमेशा की तरह Dr. Krishan Kumar ji मेरे Son in law हमें लेने आए हुए थे और उन्होंने मुझे Doctors को दिखाया तथा इधर उधर से सलाह करके मुझे Hearing Aid एक कान की लगवा दी अभी दूसरी लगवानी है। यदि वह Aid शीघ्र ना लगवा देते तो मैं सभाएं नहीं सुन सकता था उन्होंने ही अपनी कार द्वारा मुझे कल्याण भेजा क्योकि Weakness के कारण मैं कहीं आ जा नहीं सकता था।

प्रवेश सभा से लेकर 16.9.12 की शाम तक देव प्रभावों की अमृत वर्षा हुई। एक से एक सभा अपना रंग दिखाती रही। कल शाम की सभा में श्रीमान जी ने उपस्थित 8 - 10 सेवकों के उदारहण दिए कि

कैसे उन्हें देव ज्योति में अपने चेहरों को देखने का सौभाग्य मिला तथा फिर देव तेज को पाकर उनके जीवन कैसे पाप सागर से निकल कर देव कुंड में स्नान करके पवित्र हो गए। दिल अंश: अंश: कर उठा कि मैं भी गुरू जी का तुच्छ सेवक बन पाया, कभी मैं ने भी धर्म विकासालय की संगत से लाभ उठाकर परिशोध की यात्रा की थी। गांव गांव में जाकर जो कुछ गल्त ढंग से खुशी खुशी लिया था, गहरे दुख से वापिस किया था। सभाएं प्रश्नों द्वारा देव धर्म की शिक्षा को दिल में उतारने वाली थी। प्रत्येक श्रोता बहुत active था।

धर्म संगत के बिना दिल मुर्झा गया था देव प्रभावों की अमृत वर्षा ने उसे हरा भरा कर दिया। परन्तु हाय रे सुख अनुरागी प्रकृति पीछे जीवन बहुत ज्यादा पतन की ओर गया है। देव जयोति में अपना आप दिखता है परन्तु देव तेज प्राप्त न कर सकने से निराशा ही हाथ आती है और उस निराशा में फंस कर ठीक साधन न हो पाने से दिल उदास हो जाता है और हिम्मत जवाब दे जाती है। अभी इतना बल नहीं मिला कि मैं अपनी अदना महा स्वार्थी छवि बता सकूँ तथा सफल साधक बन सकूँ काश मैं सतत् प्रयास कर देव प्रभाव पाकर अपना भला कर सकूँ।

इतनी गर्मी में उच्च धर्म सम्बन्धी हमारे भले के लिए कैसे बेचैन हैं। इतनी आयु में भी दो दो घण्टे देव प्रभावों की वर्षा करते रहे हैं। मैं तहदिल से माननीय बलदेव सिंह जी और माननीय बलबहादुर सिंह जी का धन्यवादी हूं कि जिन्होंने बहुत आसान ढंग से देव समाज की फिलासफी को समझाने का कष्ट किया है। भोजन का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। फिर श्रीमान बलजीत सिंह जी ने कृपा करके हमें अपने घर रखा यहां घर से ज्यादा सुख आराम मिला तथा उन के श्रद्धेय पिता जी श्रीमान भाग सिंह जी देव समाज मोगा के Student हैं उन्होंने 1948 में Matric पास की थी। मैं 1951 में हम अपने सब उपकारी अध्यापकों को याद करते रहे श्रीमान बलजीत सिंह जी कार द्वारा मंदिर में लेकर आते रहे तथा कार द्वारा घर ले जाते रहे।

सब का बहुत बहुत धन्यवाद। मेरे लिए तो Mini महोत्सव हो गया।

अति तुच्छ - वसन्त लाल

शोक समाचार

हमारे वरिष्ट धर्म सम्बधी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के बजुरग माननिय पिता जी का 24 सितम्बर की रात को देहान्त हो गया है। वह बहुत ही नेक दिल, सेवाकारी वा श्रद्धावान थे। उनके जीवन की बहुत सी घटनाएं अनुकरणिय हैं। उनका स्वर्गवास होना परिवार से एक नेक रुह का बिछुड़ जाना है। हम कामना करते हैं कि उनकी हर प्रकार से सहायता और रक्षा हो और उनके आत्मा को धैर्य्य वा शान्ति मिले।

श्रीमान जी का मोबाईल नं: 9463551195 है।

गंगा अभी सूखी नहीं

आज के इस युग में जहां स्वार्थ, भृष्टाचार, धन लोलुपता का राज है, वहां हर मनुष्य निराश और हताश है। समाचार पत्र ऐसे लोगों के कारनामों से भरे मिलते हैं, कहीं ढूंडने से कभी कभी ही कोई परोपकारी, ईमानदार इन्सान का ज़िकर मिलता है। पिछले दिनों दो विपरीत घटनाएं हुई। जहां एक ने निराश किया तो दूसरी ने एक नई आशा जगाई।

मैं और मेरे पति चण्डीगढ़ ऐयरपोंट पर बैठे थे। कुछ देर इन्तज़ार करनी थी, फिर बोंडिंग शुरू होनी थी। तो हम आगे बढ़े और एक सोफा खाली था, उस पर बैठने लगे, उसी समय एक साथ वाले सोफे में बैठी स्त्री बोल उठी कि आप यहां न बैठें यहां मेरे बच्चे बैठे हैं, और उसने एक बहुत दूर कुर्सियों की ओर ईशारा किया कि वहां जाकर बैठ जाओ। उस समय उसके बड़े बड़े बच्चे आराम से खड़े थे और खेल रहे थे। वेटिंग केवल 15 - 20 मिन्ट की थी, पर उस औरत को न हमारी उमर का लिहाज़ हुआ और न ही इतनी दूर जाने की हमारी तकलीफ का। उसका यह स्वार्थ पूर्ण रवैया बहुत दुखदाई लगा।

परन्तु एक और घटना मेरी बहन के साथ घटी। वह भी एयरपोर्ट पर थी। वह कैनेडा एक महीने के लिए अपनी बड़ी बहन के पास गई थी। वहां से वापसी पर उसने दुबारा दुबई से जहाज पकड़ना था। किसी कारण उसकी फलाईट मिस हो गई। वह बहुत परेशान, ऐयरपोर्ट वालों ने कहा कि आपको हम अगली फलाईट पर चढ़ा देंगे, परन्तु आपको 100 डालर देने पड़ेंगे, परन्तु उस समय उसके पास कम डालर थे, वह बहुत परेशान हो रही थी, उसने मेरी बेटी को दिल्ली फोन किया कि इलैक्ट्रोनिक मीडियम से वह रू० भेजे, वह कहीं रास्ते में थी, तो उसने कहा कि मैं घर जाकर अभी भेजती हूं। इतने में मेरी बहन फोन का कार्ड लेने के लिए एक स्थान पर गई। उसको दो भारतिय लड़कों ने परेशान देखा, वह तनजानियां के रहने वाले थे, वहां उनकी अपनी बिजनिस थी। उनके पूछने पर मेरी बहन ने अपनी समस्या बताई कि मैं फोनकार्ड लेकर इंडिया फोन करना है, उन्होंने झट अपना फोन दे दिया कि आप परेशान न हों आप हमारा फोन इस्तेमाल कर लें। लेकिन बताएं कि आपकी समस्या क्या है, तो उसने सारी घटना बताई कि मैंने इंडिया से 100 डालर ट्रांसफर करवाने हैं। उन भले लोगों ने झट से 100 डालर अपनी जेब से निकाले और उसे दे दिए और फोन करने को कहा कि आप दिल्ली बता दें कि अब आपको रू० की ज़रूरत नहीं है। मेरी बहन ने बहुत ज़ोर लगाया कि मेरे पास कुछ डालर तो हैं, परन्तु उन्होंने 100 डालर ज़बरदस्ती दे दिए ताकि आपके डालर आपके कहीं और काम आ सकते हैं। मेरी बहन ने दिल से उनका धन्यवाद किया और चण्डीगढ़ में उसके माता पिता का पता पूछा। बहुत ज़ोर देने पर उन्होंने बता दिया। चण्डीगढ़ में आकर मेरी बहन उनको मिली और रू० वापिस करने को ज़ोर दिया, परन्तु उन्होंने भी रू० लेने से इन्कार कर दिया। कहने को वह बनियां जाति से सम्बन्धित थे, परन्तु इतने उदार हृदय थे जिन्होंने दूसरे की तकलीफ को अपनी तकलीफ समझा और ऐसी मुसीबत की घड़ी में फरिश्ता बनकर आए। धन्य हैं ऐसे माता पिता, जिन्होंने ऐसे सुहृदय बच्चों को जन्म दिया। यह घटना सुनकर मेरे दिल में आया कि इस स्वार्थी संसार में भी अभी उच्च भावों की गंगा सूखी नहीं। हमें भी अपनी हैसीयत अनुसार ज़रूरतमन्द के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

सुरजीत बराड़

शुभ संग्राम

मल्लेका, 5.9.12, शाम 8 बजे: - श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने यह सभा करवाई, जिसमें लगभग 50 जन शामिल थे। सभा में मनुष्य के भीतर के सुख अनुरागों की लीला का वर्णन किया गया। कई प्रसिद्ध जनों के जीवनों की बर्बादी के विषय में बताया गया। देवात्मा के दर के बिना जीवन का ज्ञान नहीं मिलता, देव ज्योति के बिना यह रोग, रोग दिखाई नहीं देते, उल्टा सुखकर और प्यारे लगते हैं। इन सुखों की तह में बर्बादी दिखाई नहीं देती। इन रोगों से छुटकारा इनके प्रति घृणा द्वारा ही होता है। परम पू० भगवान देवात्मा इन रोगों के प्रति दुख पैदा करके उनसे मुक्त करते हैं। श्रीमान पंडित नेत राम जी की और कुछ अन्य उदाहरणों द्वारा इस निराले दर की महिमा का वर्णन किया गया।

6.9.12, सुबह 9 बजे: – इसमें बताया गया कि सम्बन्धों के बिना मनुष्य जीवन का कोई अर्थ नहीं। मनुष्य का सारा विकास समाज के भिन्न भिन्न सम्बन्धों द्वारा ही सम्भव है। हमारी पुरानी संस्कृति सम्बन्धों को त्याग कर जंगलों में जाकर ईश्वर की प्राप्ति की है, यह मिथ्या और हानिकारक है। सम्बन्धों द्वारा ही मान्सिक वा हार्दिक विकास सम्भव है। सम्बन्धों के त्याग से उच्च भावों को हानि पहुंचती है। न्याय की भावना घटती है। शुक्रगुजारी की भावना का नाश होता है। स्वार्थी जीवन का अधिकार बढ़ता है। परम पू० भगवान देवात्मा ने सम्बन्धों में ही जीवन की रक्षा और विकास की शिक्षा दी है सम्बन्धों में अपने कर्तव्यों की पालना करके जिम्मेवारियों को पूरा करना ही धर्म है। माता पिता और सन्तान का सम्बन्ध, पति पत्नी के सम्बन्ध की उदाहरणें देकर उच्च भावों की जरूरत के बारे समझाया गया। परम पू० भगवान देवात्मा समाज में ईमानदारी, सेवा, परोपकार की भावना कैसे पैदा करते हैं बताया गया। परम पू० भगवान देवात्मा के प्रभावों के द्वारा सौभाग्यवान जन सम्बन्धों में आत्म शुद्धि करके अपने जीवन का विकास करने के योग्य हो जाते हैं। कई उदाहरणों द्वारा सत्गुरू द्वारा परम हितकर धर्म शिक्षा का वर्णन किया गया।

6.9.12, शाम 8 बजे: – इस सभा में हाजरी 90 के करीब थी। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने नेचर के असीम रूप के विषय में रोशनी पाई। नेचर के हर जगत में इसके नियम काम करते हैं। यह नियम अटल हैं। इन नियमों को कोई बदल नहीं सकता। नेचर के नियमों के विरुद्ध कोई भी गुरू, सन्त ऋषि, मुनि, तांत्रिक आदि कोई नहीं जा सकता। किसी भी व्यक्ति के झूठे आर्शीवाद, झूठे तावीज़, झूठे मन्त्र, सब अन्धकार को फैलाने वाले हैं। नेचर की हर घटना के पीछे कारण हैं और घटनाओं की लड़ी है। ज्योतिष विद्या आदि सब मान्सिक अन्धकार ही पैदा करते हैं। एक नौजवान ने सभा में ही पूछा कि क्या नज़र लगना भी मिथ्या है। इस विषय में मिथ्या रूप को विस्तार से समझाया गया। पाठ, जाप हमारी समस्याओं के हल नहीं है। दुखों, बिमारियों उल्झनों, समस्याओं आदि के कारणों को जानो और उनको दूर करने से ही हल सही तरीके से निकलता है। परम पू० भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि मेरी कोई शिक्षा यदि विज्ञान के अनुसार मिथ्या सिद्ध होती है, तो वह भी छोड़ने के योग्य है। इस परम शिक्षा का मूल है कि जीवन के हर पक्ष में नेचर के नियमों को जानना और पूरा करना ही विकास है।

शुक्रवार 7.9.12, सुबह 9 बजे:- इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी बताया कि उच्च भाव पैदा किए बिना धर्म नहीं मिलता। दया भाव धर्म का एक अंग है। शुक्रगुज़ारी के भाव के बिना मनुष्य स्वार्थी, कमीना और पापी रहता है। कुछ घटनाएं दया भाव की बताई गई। हानि परिशोध का भाव भी बहुत महत्वपूर्ण है। धर्म का अंग है। शुक्रगुज़ारी की दिल को छूने वाली कुछ घटनाएं बताई गई। आत्म शुद्धि और सच्ची मोक्ष हानि परिशोध भाव के द्वारा ही सम्भव है। किसी जाप या तप द्वारा कोई शुद्धि नहीं होती। सभापति के उच्च भावों के विषय में बताते हुए बेबस अश्रु बह रहे थे। सभा के बाद एक पति पत्नी ने अपनी माता जी की दर्द भरी अवस्था का रो रोकर वर्णन किया और मां के लिए कुछ करने का सकंल्प किया।

दुपहिर 3 बजे:- प्रिंसीपल सरताज सिंह जी के स्कूल में श्रीमान जी ने बच्चों को नीति शिक्षा की सभा कराई। जिसमें बताया गया कि सन्मान भाव से जीवन का विकास होता है। दूसरों की सहायता में ही अपनी सहायता है। हर छोटी बात के लिए भी धन्यवाद कहना, हर छोटी खराब बात के लिए खेद प्रगट करना, मिलने वाले हर व्यक्ति को मुस्करा कर मिलना भरे दिल से उक्त सचाई को स्पष्ट किया गया।

8 बजे शाम:- शाम की सभा में 60 के करीब जन शामिल थे। इस सभा का आरम्भ पंडित नेतराम जी के भजन "लोको नीच शक्तियां बुरियां छुरियां मारदीयां" से किया गया। सभापति जी ने कई नीच वासनाओं की घटनाओं द्वारा सच्ची तस्वीर पेश की। धन के प्रेम और स्वार्थ के जीवन की भयानकता दर्शाई गई। स्वाद वासना वा काम वासना के अत्यन्त भयानक उदाहरण पेश किए गए। सभा के बाद एक जन ने कहा कि ऐसे झटके की बहुत ज़रूरत थी।

8.9.12 शनिवार, सुबह 9 बजे:- इसमें सभापति जी ने श्रद्धा के भाव का महत्व बताया। धर्म प्राप्ति के लिए श्रद्धा का भाव अति अवश्यक है। श्रद्धा भाव से ही नेचर में उच्च वा महान व्यक्तियों के सच्चे दर्शन होते हैं। इससे ही मनुष्य सच्ची दीनता की दुनियां में पहुंच जाता है। महान व्यक्तियेां का सच्चा सन्मान करके, उनकी महानता के उच्च गुणों को प्राप्त करने के कुछ न कुछ अंश तक योग्य हो जाता है। स्वंय उच्च रूप में ढलने के योग्य हो जाता है। विशुद्ध परोपकारियों के प्रति श्रद्धा मनुष्य को परोपकारी मिशन की सहायता करने के योग्य बना देता है। आत्मिक विकास का सबसे उत्तम नियम श्रद्धा भाव ही है। अन्त में सभापति जी ने कृतज्ञता भाव के दो बहुत सुन्दर हृदय स्पर्षिय उदाहरण प्रस्तुत किए।

दुपहर, 1.00 बजे:- प्रिंसीपल सरताज सिंह जी बाजवा के स्कूल में नीति शिक्षा कराई। इसमें सेवा वा शुक्रगुजारी की घटनाएं सुनाई गई। श्रीमान मेहर सिंह जी ने भी कुछ मिन्टों के लिए बहुत सुन्दर ब्यान किया। सरताज सिंह जी ने धन्यवाद करते हुए अपील की कि ऐसा प्रोग्राम रखते रहें।

रात 8 बजे:- इस सभा में भी 48-50 जन शामिल थे। सभापति श्री बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि अन्धेरा बहुत ख़ौफ़नाक होता है। रोशनी बहुत मुबारक वस्तु है। भौतिक रोशनी मान्सिक रोशनी और सात्विक रोशनी के विषय में बताया गया। अन्त में यह बताया गया आत्मिक रोशनी वा देव ज्योति की अत्यन्त अवश्यकता है। महान पुरूष भी अपने रूप को स्वयं नहीं देख सकते, उसके विकास और विनाश के बारे में नहीं जान सकते। अपने रूप को जानने, उसके

विनाश और विकास को जानने के लिए यह ज्योति अति अवश्यक है। यह केवल देव शक्तियों से ही प्रकाश पाती है। हमारे बड़े धन्य भाग्य हैं कि हमारा देव ज्योति और तेज के सूर्य परम पू० भगवान देवात्मा के दर पर आना सम्भव हो गया। अपने लिए और हाजरीन के लिए इस ज्योति की प्राप्ति के लिए गहरी अपील करते हुए यह सभा समाप्त की गई।

9.9.12, रविवार, सुबह 9 बजे:- इस सभा में भी 45-46 जन शामिल हुए। सभापति जी ने मनुष्यात्मा वा देवात्मा के मूल अन्तर के विषय में ब्यान किया। देवात्मा शुभ ही चाह सकते हैं, मनुष्य सदा सुख चाहता है। इसलिए मिथ्या और अशुभ को प्यार करता है। देवात्मा पाप के नाश कर्ता हैं। मनुष्य सुख के प्रेमों के आगे बेबस वा लाचार होकर पाप करता है। देवात्मा सब हितों के दाता हैं। मनुष्य दुष्ट, कुटिल और नीच अनुरागी है। मनुष्य नीच, गतियों के विकारों से भरा हुआ है, देवात्मा जीवन देने वाले देव अमृत के भंडार और सूरज है। मनुष्य अपने नीच सुख अनुरागों के कारण अन्धकार का वासी है। सभापति जी ने देवात्मा के अतुल त्यागी, अतुल युद्ध कर्ता और अतुल दान के दाता रूप का ब्यान करते हुए बहते हुए अश्रुओं से भाव विभोर होकर उस अतुल दान का ब्यान किया। जो उन्होंने खुद भी देवात्मा के दरबार से प्राप्त किया था। इस सत्संग की यह आख़िरी सभा थी। इसमें 1100 रू० दान प्राप्त हुआ।

चण्डीगढ़ 9.9.12 को ईतवार का साधन हमेशा की तरह श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें दर्जन के करीब एक को छोड़कर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट और P.HD जन शामिल थे।

पहले सुनील दत्त जी ने "सारे जहां में न्यारे" नामक भजन का गान किया। फिर अर्चन करके देव स्तोत्र का गान वा व्याख़्या की गई। उसके बाद सहाय प्रार्थना की गई। फिर "जीवन ज्योति मुझे देकर दिखाओ मुझको हे सत्गुरू" नामक प्रार्थना विषयक भजन गाया गया।

फिरं सभापति जी ने बताया कि यह बड़ी सचाई है कि सारा मनुष्य मात्र अन्धेरे में है। यह पू० भगवान का फरमान है। उसे अपना आप दिखाई नहीं देता। भगवान देवात्मा की रोशनी मनुष्य रूप को उज्जवल करती है। परन्तु एक एक बार हम अपनी नीचता को देखकर और बचकर, फिर भी हम यह नहीं देखते कि जैसे पहली नीचता दिखाई नहीं देती थी, उसी प्रकार और नीचता भी हो सकती है। ऐसे ज्योति दाता धन्य हैं जो मेरा अन्धापन दिखाते हैं और दूर करते हैं गुरू का ज्योति दाता सूर्य रूप दिखाई नहीं देता है। सभापति जी ने किस प्रकार अपनी नीचता देखी है, उसका मुक्त कंठ से रो रोकर ब्यान किया। गुरू के प्रभावों का बड़ा ही उच्च, सुहावना वातावरण बना। अधिकारियों को गुरू के आगे झुकने के लिए बेबस कर रहा था। कई हृदयों को उत्साह से भर रहा था। कल्याण उत्सव के लिए प्रेरणा की।

संगरूर:- सभा के बाद श्रीमान जी संगरूर पहुंचे। श्रीमान सीता राम जी और उनके परिवारिक जनों को कल्याण जाने के लिए पुरज़ोर प्रार्थना की। जल्दी श्रीमान जी आगे रवाना हो गए।

थराजवाला:- यहां 5 बजे पंहुचकर 18-20 लोगों को लेकर एक सभा की। श्रीमान जी ने एक नौजवान की सहायता से कई घरों में सभा का पता दिया।

पृष्ट 13 का बाकी

Published on 5th of the month
20
अक्तूबर - 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सभा में बताया कि सुख अनुरागों की चाट से मनुष्य कैसे बर्बाद होते हैं, इसका भयानक चित्र पेश किया। गुरू महाराज द्वारा पैदा की संगत मनुष्य की रक्षा करती है। हाजरीन प्रभावित हो रहे थे। कल्याण उत्सव का पता दिया और अगली सुबह एक सभा रखी गई।

सुबह 8 बजे के बाद एक सभा की गई। इस सभा में बताया गया कि अजन्ता अलोरा की गुफाओं के कीमती आर्ट खजाने की तरह देव समाज पर भी मिट्टी के ढेर चढ़ गए हैं और वह छुप गई है। परम पू० भगवान देवात्मा "नेह कलंक" हस्ती हैं। उन्होंने नया वाक्य सुनाया है कि इस नेचर को बनाने वाला कोई नहीं, चलाने वाला कोई नहीं। नेचर को उसकी अपनी शक्तियां चलाती हैं। मनुष्य को उसके सुख अनुराग चलाते हैं, अपने नीच सुखों के प्यार दिखाई नहीं देते, न हम उनसे बच सकते हैं। पू० भगवान की पैदा कर्ता संगत मनुष्यों को उनके नीच सुख अनुराग दिखाती है बल्कि उनका ज़ोर भी घटता है। गुरू महाराज हमें अपने अन्धकार में दिखाई नही देते, न ही उनके निकट होने की इच्छा होती है। सत्गुरू ने हजारों पापी बचाए और तारे हैं। परन्तु अन्धे हृदय इससे खाली रहने के लिए बेबस और लाचार हैं।, घाटा खाने के लिए तैय्यार हैं, परन्तु फिर भी खुश प्रसन्न हैं। वहां भी संगत का निमन्त्रण दिया और गोनियाना के लिए रवाना हो गए।

गोनियानाः – वहां 2 बजे तक पहुंचे। वहां सब साथियों को कल्याण सत्संग के लिए प्रेरणा की। महिमा से हरिन्द्र सिंह जी भी मिल गए। वहां से वह कल्याण पहुंच गए और शाम 6 बजे सभा रखी गई।

महोत्सव मुबारक निकट आ रहा है।

पाठक यह जानकर खुश होंगे कि परम पू० भगवान देवात्मा का 162 वा शुभ जन्म महोत्सव निकट आ रहा है। वह हर वर्ष की तरह चण्डीगढ़ में 27, 28, 29 और 30 दिसम्बर 2012 को मनाया जाएगा। पाठक गण नोट करने की कृपा करें।

मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts